

लोक सुनवाई के लिए पर्यावरणीय प्रभाव आकलन रिपोर्ट का सारांश
कोल वाशरी प्लांट का 0.96 MTPA से 5.2MTPA तक दो चरणों में विस्तार
(चरण-I: 0.96 MTPA से 1.8 MTPA और चरण-II: 1.8 MTPA से 5.2 MTPA)

परियोजना स्थल :-

ग्राम- बाजारमुड़ा एवं ढोलनारा, तहसील-तमनार, जिला-रायगढ़, छत्तीसगढ़



द्वारा
मेसर्स सारदा एनर्जी एंड मिनरल्स लिमिटेड

अंतर्वस्तु

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
1.0	परियोजना विवरण	3-4
2.0	पर्यावरण का विवरण	4-6
3.0	प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव एवं शमन उपाय	6-7
4.0	पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम	7
5.0	अतिरिक्त अध्ययन	8
6.0	परियोजना लाभ	8
7.0	पर्यावरण प्रबंधन योजना	9
8.0	सलाहकार	9-10

1.0 परियोजना विवरण

मेसर्स सारदा एनर्जी एंड मिनरल्स लिमिटेड ने ग्राम- बाजारमुड़ा और ढोलनारा, तहसील - तमनार, जिला- रायगढ़, छत्तीसगढ़ में मौजूदा कोल वाशरी को 0.96 MTPA से 5.2 MTPA (चरण-I: 0.96 MTPA से 1.8 MTPA और चरण-II: 1.8 MTPA से 5.2 MTPA) तक विस्तार करने का प्रस्ताव दिया है। एसएच-1 परियोजना स्थल से पश्चिम दिशा में 12.5 किमी दूर है। निकटतम गांव ढोलनारा है, जो उत्तर पश्चिम दिशा में लगभग 0.7 किमी दूर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन रायगढ़ रेलवे स्टेशन है जो दक्षिण दिशा में लगभग 31.7 किमी की दूरी पर स्थित है और निकटतम हवाई अड्डा वीर सुरेंद्र साई हवाई अड्डा, झारसुगुड़ा है, जो दक्षिण पूर्व में लगभग 64.5 किमी की दूरी पर स्थित है। साइट और अध्ययन क्षेत्र भारत टोपो शीट संख्या-64एन/8 के सर्वेक्षण में आता है। केलो नदी दक्षिण पूर्व दिशा में लगभग 3.4 किमी पर है, बेंदरा नाला लगभग 4 किमी पर है। दक्षिण पूर्व दिशा में 1 किमी दूर, चीनी नाला उत्तर पूर्व दिशा में लगभग 4.9 किमी दूर है, डुमेर नाला पूर्व दिशा में लगभग 5 किमी दूर है, पझार नदी पश्चिम दिशा में लगभग 5.5 किमी दूर है, डिजी नाला दक्षिण पश्चिम दिशा में लगभग 8.5 किमी दूर है और कोलेदेगा नाला परियोजना सीमा से दक्षिण पूर्व दिशा में लगभग 9.5 किमी दूर है। 10 किमी के दायरे में कोई वन्यजीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान नहीं हैं।

विस्तार परियोजना के लिए मानक संदर्भ शर्तें (टीओआर) MoEF&CC द्वारा फ़ाइल संख्या IA-J-11015/37/2004-IA-II(M) दिनांक 25.07.2023 के माध्यम से प्रदान की गई हैं। ईआईए/ईएमपी का मसौदा तैयार किया जा रहा है और इसे CECB को लोक सुनवाई के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तावित परियोजना गतिविधि "कोल वाशरीज़" की श्रेणी में आती है और ईआईए अधिसूचना 2006 की परियोजना गतिविधि 2 (ए) और आज तक इसके संशोधन के तहत इसे "श्रेणी-ए" के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

मौजूदा यूनिट 10.12 हेक्टेयर में स्थित है और विस्तार परियोजना के लिए किसी अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार, विस्तार के बाद आवश्यक कुल भूमि वही यानी 10.12 हेक्टेयर रहेगी।

वर्तमान में मौजूदा वाशरी में 135 मानव शक्तियाँ कार्यरत हैं। चरण-1 विस्तार के लिए किसी अतिरिक्त जनशक्ति की आवश्यकता नहीं है। दूसरे चरण के विस्तार के लिए 104 और व्यक्तियों की आवश्यकता होगी जिससे कुल जनशक्ति 239 हो जाएगी।

वाशरी के लिए आवश्यक पानी धुलाई, धूल दमन और घरेलू प्रयोजन के लिए है। कोयले की धुलाई एक बंद जल सर्किट का उपयोग करके की जाती है जहां धोने के बाद पानी को उपचारित किया जाता है और कोयला धोने के लिए पुनर्चक्रित किया जाता है। धुलाई के दौरान बर्बाद हुए पानी की भरपाई के लिए वॉटर सर्किट में केवल मेक अप पानी डाला जाता है। विस्तार के बाद कुल पानी की आवश्यकता 851 केएलडी होने का अनुमान है।

मौजूदा वैगनरी के लिए बिजली की आवश्यकता 1.0 एमवीए है। क्रशिंग और स्क्रीनिंग सीकेटी सहित कोयला वॉशरी क्षमता के विस्तार के लिए आवश्यक अतिरिक्त भार लगभग 3.0 एमवीए (चरण I के लिए 1.0 एमवीए और चरण II के लिए 2.0 एमवीए) होगा, जिससे कुल बिजली की आवश्यकता 4 एमवीए हो जाएगी। बिजली की आपूर्ति छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (सीएसपीडीसीएल) से की जा रही है और विस्तार के बाद भी इसका पालन किया जाएगा। बिजली गुल होने की स्थिति में, 2 x 250 केवीए के मौजूदा डीजी सेट आवश्यक भार की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। किसी और डीजी सेट की आवश्यकता नहीं है।

कोल वॉशरी में मैग्नेटाइट मिश्रित पानी का उपयोग करके कच्चे कोयले को उतारना, भंडारण, हैंडलिंग, क्रशिंग, स्क्रीनिंग और कोयले की सफाई शामिल है। कोल वाशरी से कोई भी अपशिष्ट जल बाहर नहीं छोड़ा जा रहा है। आसपास के इलाकों में स्थित बिजली संयंत्रों को दलाली दी जा रही है। क्रशर और स्क्रीन से निकलने वाली धूल को नियंत्रित करने के लिए बैग फिल्टर लगाए गए हैं।

2.0 आधारभूत पर्यावरण का विवरण

1 मार्च 2023 से 31 मई 2023 तक गर्मी के मौसम के दौरान साइट के आसपास के 10 किमी क्षेत्र जिसे अध्ययन क्षेत्र माना गया था में बेसलाइन डेटा उत्पन्न किया गया है। पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मानक/अनुमोदित प्रक्रियाओं का पालन करके डेटा तैयार

किया गया है। परियोजना स्थल के पास हवा की गति, हवा की दिशा, सापेक्ष आर्द्रता और तापमान पर मौसम संबंधी डेटा तैयार किया गया है। 8 स्थानों पर परिवेशीय वायु गुणवत्ता उत्पन्न की गई है। 8 स्थानों पर शोर का स्तर मापा गया है। 8 स्थानों पर सतही जल की गुणवत्ता एकत्र की गई और उसका विश्लेषण किया गया है; 8 स्थानों पर भूजल गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया है। 5 स्थानों पर मिट्टी की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में मौजूद पौधों और जानवरों का डेटा जिला वन विभाग से एकत्र किया गया है।

अध्ययन अवधि के दौरान न्यूनतम तापमान 13°C और अधिकतम तापमान 34°C दर्ज किया गया, न्यूनतम आर्द्रता 55% और अधिकतम आर्द्रता 154% दर्ज की गई। अध्ययन अवधि में प्रमुख हवा की दिशा अध्ययन अवधि के दौरान एनएनई - एसएसडब्ल्यू से थी। अध्ययन अवधि के दौरान औसत हवा की गति 3.96 मीटर/सेकेंड है। अध्ययन के दौरान, हवा का झोंका दक्षिण - दक्षिण - पश्चिम की दिशा में था और हवा की गति सीमा शांत से 4.91 मीटर/सेकेंड तक पाई गयी। हवा की दिशा और हवा की गति के आधार पर यह व्याख्या की गई है कि अध्ययन अवधि के दौरान वायु प्रदूषक का अधिकतम फैलाव दक्षिण - दक्षिण - पश्चिम दिशा में होगा।

परिवेशी वायु गुणवत्ता का सारांश

- पीएम₁₀=57.1-92.7µg/m³
- PM_{2.5} =30.9-52.1µg/m³
- SO₂=6.3-15.4µg/m³
- NO₂ =9.1-32.6µg/m³
- CO = 280-1430 µg/m³ का

शोर स्तर के अध्ययन से पता चलता है कि शोर का स्तर स्वीकार्य मानदंडों को पूरा कर रहा है। क्षेत्र में शोर का स्तर भिन्न-भिन्न होता है 45.8 से 73.8दिन के समय डीबीए और 34.6 से 65.7रात के समय डी.बी.ए.

भूजल गुणवत्ता का सारांश

- पीएच = 7.16-7.41
- कुल घुलित ठोस =423 से 480मिलीग्राम/एल
- कुल कठोरता =256-330मिलीग्राम/एल

- कुल क्षारीयता = 261-292 मिलीग्राम/एल
- आयरन = 0.15-0.26 मिलीग्राम/लीटर
- किसी भी नमूने में टोटल कोलीफॉर्म नहीं पाया गया

भूजल की गुणवत्ता पीने के लिए बीआईएस द्वारा निर्धारित विनिर्देशों को पूरा करती है (आईएस:10500:2012)

सतही जल गुणवत्ता का सारांश

- पीएच = 7.36-7.56
- टीडीएस = 295-435 मिलीग्राम/लीटर।
- डीओ = 5.6-6.3 मिलीग्राम/लीटर।
- सीओडी = 12.7-32.3 मिलीग्राम/लीटर।
- बीओडी = 2.5-4.2 मिलीग्राम/लीटर।

मिट्टी की गुणवत्ता का सारांश

- pH:- 7.25-7.36
- विद्युत चालकता:- 210-280 μ S/सेमी
- सोडियम अवशोषण अनुपात:- 0.30-0.60
- धनायन विनिमय क्षमता:- 12.5 - 15.6 एमईक्यू/100 ग्राम
- कार्बनिक पदार्थ के संदर्भ में ज्वलन पर हानि:- 0.62-0.79%।

मिट्टी जैविक कार्बन स्थिति में मध्यम है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे प्रमुख पोषक तत्वों का स्तर क्रमशः 147.96 किलोग्राम/हेक्टेयर से 187.68 किलोग्राम/हेक्टेयर, 19.42 से 20.77 किलोग्राम/हेक्टेयर और 189.7 से 311.02 किलोग्राम/हेक्टेयर तक था। पौधारोपण के लिए तांबा, जस्ता, बोरान और लौह जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व न्यूनतम और पर्याप्त हैं।

वनस्पति और जीव: अध्ययन क्षेत्र (10 किमी त्रिज्या) में तीन आरक्षित वन हैं। सिलोट आरएफ 1.4 किमी (एनडब्ल्यू), टोलगे आरएफ 4.8 किमी (ई) और समारुमा आरएफ 10 किमी (एसडब्ल्यू) पर। वहाँ तीन संरक्षित वन भी हैं। एक पीएफ उत्तर में साइट के निकट है और अन्य दो क्रमशः डब्ल्यू में 0.15 किमी और एस में 0.16 किमी पर हैं। केलो नदी 3.4 किमी (एसई), बेंदारा नाला 4.1 किमी (एसई), चीनी नाला 4.9 किमी (एनई) पर है, डुमेर नाला 5 किमी (ई) पर है, पझार नदी 5.5 किमी (डब्ल्यू) पर है। डिजी नाला 8.5

किमी (एसडब्ल्यू) पर है और कोलेदेगा नाला 9.5 किमी (एसई) पर है। अध्ययन क्षेत्र में 12 वन हैं जहाँ बड़ी संख्या में वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ संग्रहीत हैं।

प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान स्तनधारियों की कुल 16 प्रजातियाँ, सरीसृपों की 9 प्रजातियाँ, पक्षियों की 57 प्रजातियाँ और तितलियों की 11 प्रजातियाँ देखी गई हैं। अध्ययन क्षेत्र में भारतीय साही, बार्किंग हिरण, भारतीय कोबरा, रसेल वाइपर और भारतीय गिरगिट देखे गए जो वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 में अनुसूची-1 के रूप में संरक्षित हैं।

2011 की जनसंख्या जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 61185 है जिसमें 49.9 प्रतिशत पुरुष और शेष 50.1 प्रतिशत महिलाएं हैं। चूँकि अध्ययन क्षेत्र में कोई शहरी क्षेत्र नहीं है इसलिए सम्पूर्ण जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र की है। अध्ययन क्षेत्र में कुल लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 1004 महिलाओं का निकाला गया है।

3.0 प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव एवं शमन उपाय

कोयला धूल कोयले की हैंडलिंग और क्रशिंग सह स्क्रीनिंग प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाला मुख्य प्रदूषक है। कोयले की धुलाई के दौरान धूल उत्पन्न होने को कम करने के लिए पानी के छिड़काव का उपयोग किया जा रहा है। कोयला क्रशिंग और स्क्रीनिंग के दौरान धूल उत्पादन को कम करने के लिए गीली धूल दमन प्रणाली स्थापित की गई है। क्रशर इकाई को धूल निष्कर्षण प्रणाली और बैग फ़िल्टर प्रदान किया गया है। सभी बेल्ट कन्वेयर कवर किए गए हैं। आंतरिक सड़कें पक्की हैं। औद्योगिक वैक्यूम क्लीनर का उपयोग कार्यशालाओं और अन्य कार्य क्षेत्रों में किया जाता है। सभी आंतरिक सड़कों की दैनिक सफाई के लिए मैकेनिकल रोड स्वीपिंग मशीनें तैनात की गई हैं।

कोयले की धुलाई के दौरान उत्पन्न 100% अपशिष्ट जल को एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट में उपचारित किया जाता है। उपचार के बाद पानी को कोयले की धुलाई के लिए पुनर्चक्रित किया जाता है। घरेलू सीवेज को सेप्टिक टैंक में भेजा जाता है।

कम शोर उत्पन्न करने वाले संयंत्र और मशीनरी का उपयोग किया जाता है। 33% भूमि क्षेत्र को ग्रीनबेल्ट के रूप में विकसित किया गया है। संयंत्र की सीमा पर शोर का स्तर 70 डीबीए से नीचे बनाए रखा जाता है।

वाशरी में उत्पन्न मिडलिंग्स को पास के बिजली संयंत्रों, प्रोपोनेंट के कैप्टिव यूनिट्स तथा अन्य ग्राहकों जिनसे LOA साइन किया गया है को बेचा जाता है।

इस विस्तार के कारण मौजूदा ट्रक आवाजाही पैटर्न में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आएगा। क्षेत्र की कोयला खदानों से पहले से ही सड़क मार्ग से परिवहन किए गए कोयले का अंश धुलाई के लिए कोयला वाशरी द्वारा रोका जाएगा। परिवहन अधिकारियों के परामर्श से उचित यातायात प्रबंधन योजना लागू की जाएगी।

4.0 पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम

नियमित पर्यावरण निगरानी के लिए पर्यावरण प्रबंधन सेल (ईएमसी) का गठन किया गया है। रेगुलर मॉनिटरिंग निर्धारित कानूनों और मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए की जाती है। ईएमसी का प्रमुख प्लांट प्रमुख को रिपोर्ट करता है। ईएमसी में योग्य कर्मचारियों की भर्ती की जाएगी। परिवेशीय वायु, स्टैक उत्सर्जन, भगोड़े धूल उत्सर्जन, शोर स्तर, भूजल गुणवत्ता, सतही जल गुणवत्ता और मिट्टी की पर्यावरणीय निगरानी मानदंडों के अनुसार की जाती है। ईएमसी निम्नलिखित कार्यों के लिए जिम्मेदार है:-

इसकी नियमित निगरानी:-

- क्षणिक उत्सर्जन को मापना, कार्य वातावरण में PM2.5 और PM10 को मापना और सुधारात्मक और निवारक कार्रवाई शुरू करने के लिए किसी भी असामान्यता की रिपोर्ट करना।
- क्रशर की हवा की ऊपरी और निचली दिशा में, संयंत्र की सीमा पर (3 स्थान, एक दूसरे से 120 डिग्री) पर परिवेशी वायु गुणवत्ता को मापना।
- अपशिष्ट जल की गुणवत्ता (इनलेट और आउटलेट जल अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र) की जाँच करना।
- कोयला भंडारण क्षेत्र और आसपास के गांवों के पास भूजल की गुणवत्ता की जांच करना।
- संयंत्र की सीमा, निकटतम आवास, राजमार्ग के पास और कार्य क्षेत्रों में शोर की निगरानी।
- संयंत्र सीमा के भीतर ग्रीनबेल्ट और हरियाली का विकास और रखरखाव।

5.0 अतिरिक्त अध्ययन

कोयला यार्ड में आग से निपटने के लिए पर्याप्त अग्नि शमन उपाय सुनिश्चित किये जायेंगे। किसी भी दुर्घटना के दौरान जन स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए आपदा प्रबंधन योजना तैयार की गई है।

सीईआर गतिविधियां और सार्वजनिक सुनवाई प्रतिबद्धता तीन साल से अधिक की होगी। यह राशि स्थानीय स्कूलों में कक्षाएँ बनाने, शिक्षण सहायता प्रदान करने, सामुदायिक केंद्र बनाने, आस-पास के गाँवों में पीने

के पानी की सुविधा विकसित करने, क्षेत्र में एनीकट और चेक डैम जैसी वर्षा जल संचयन संरचनाएँ बनाने, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में बुनियादी सुविधाएँ और उपकरण विकसित करने पर खर्च की जाएगी। और जनसुनवाई के अनुसार.

6.0 परियोजना लाभ

कोयले की धुलाई से खराब ग्रेड के कोयले की गुणवत्ता में सुधार होकर उच्च ग्रेड के कोयले की गुणवत्ता में सुधार होता है। धुलाई के दौरान खराब ग्रेड के कोयले में मौजूद गंदगी जैसे अपशिष्ट पदार्थों को हटा दिया जाता है। इस्पात निर्माण और सीमेंट निर्माण के लिए उच्च श्रेणी के कोयले की आवश्यकता होती है। ताप विद्युत संयंत्रों में उच्च श्रेणी के कोयले के उपयोग से संयंत्र की दक्षता में सुधार होता है।

कोल वाशरी की मांग निम्नलिखित कारणों से बढ़ रही है:

- भारत में अच्छी गुणवत्ता वाली कोयला खदानों का खत्म होना।
- मशीनीकृत खनन से कच्चे कोयले में अशुद्धियाँ बढ़ जाती हैं।
- उच्च परिवहन लागत उच्च राख वाले कोयले का परिवहन करना अलाभकारी बनाती है।
- प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण (इस्पात संयंत्रों, बिजली संयंत्रों और सीमेंट संयंत्रों द्वारा) के संबंध में सख्त पर्यावरणीय आवश्यकता को पूरा करना।

निर्माण चरण के दौरान दैनिक मजदूरी के आधार पर लगभग 100 लोगों को रोजगार मिलेगा। विस्तार के बाद परिचालन चरण के दौरान कुशल, अर्ध-कुशल और अकुशल श्रेणी में 239 व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। अर्ध-कुशल और अकुशल श्रेणी में रोजगार के लिए स्थानीय आबादी को प्राथमिकता दी जाएगी।

7.0 पर्यावरण प्रबंधन योजना

पर्यावरणीय प्रभावों के प्रभावी प्रबंधन और उचित प्रबंधन प्रक्रियाओं के माध्यम से पर्यावरण की समग्र सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण प्रबंधन योजना विकसित की गई है। अनुशंसित शमन उपायों को लागू करने और ईएमपी को संस्थागत बनाने के लिए, 420.82 रुपये के पूंजीगत व्यय का बजटीय प्रावधान किया गया है। आवर्ती वार्षिक व्यय रु. पूंजीगत व्यय 90.5 लाख रु.

पर्यावरण प्रबंधन कक्ष (ईएमसी) यह सुनिश्चित करेगा कि सभी वायु प्रदूषण नियंत्रण उपकरण, अपशिष्ट उपचार संयंत्र और जल पुनः-परिसंचारी प्रणालियाँ प्रभावी ढंग से कार्य करें। ईएमसी अधिकृत विक्रेताओं को खर्च किए गए तेल और स्नेहक और प्रयुक्त बैटरियों के निपटान की भी निगरानी करेगा। निर्माण चरण

के दौरान केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए वृक्षारोपण शुरू किया जाएगा। ईएमसी द्वारा संसाधन संरक्षण (कच्चा माल, पानी, आदि), वर्षा जल संचयन और सामाजिक वानिकी विकास की योजनाएं शुरू की जाएंगी। कर्मचारियों के लिए नियमित पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

श्रमिकों की समय-समय पर स्वास्थ्य जांच की जाएगी। ईएमसी संयंत्र में साफ-सफाई और औद्योगिक स्वच्छता सुनिश्चित करेगी। सुरक्षा विभाग के सहयोग से ईएमसी संयंत्र के चालू होने के दौरान संभावित खतरे के परिदृश्यों की पूरी समीक्षा करेगी। समीक्षा प्रदूषण उन्मूलन, संसाधन संरक्षण, दुर्घटना रोकथाम और अपशिष्ट न्यूनीकरण के लिए प्रस्तावित सुरक्षा उपायों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करेगी। ईएमपी के कार्यान्वयन से यह सुनिश्चित होगा कि परियोजना के सभी तत्व अपने पूरे जीवन चक्र में प्रासंगिक पर्यावरण कानून का अनुपालन करते हैं।

8.0 कंसल्टेंट्स

हेवी मीडिया साइक्लोन पर आधारित वेट टाइप कोल वाशरी के विस्तार के लिए ईआईए/ईएमपी की तैयारी के लिए नियुक्त सलाहकार मेसर्स जीआरसी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड है। लिमिटेड जीआरसी इंडिया भारत में आईएसओ 9001:2015, 14001:2015 और आईएसओ 45000:2018 प्रमाणित अग्रणी पर्यावरण परामर्शदाता है। इसे नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (NABET), क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) द्वारा मान्यता प्राप्त है, जो भारत में सर्वोच्च मान्यता प्राधिकरण है। जीआरसी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने एक आधुनिक अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला की स्थापना की, जो आईएस/आईएसओ 9001:2015, आईएस/आईएसओ 14001:2015 और आईएस/आईएसओ 45001:2018 के अनुरूप है। विभिन्न अध्ययनों के साथ सभी परियोजना के नमूने और विश्लेषण जीआरसी प्रयोगशालाओं द्वारा किए जाते हैं। प्रयोगशाला को एनएबीएल से मान्यता प्राप्त हुई जिसे प्रक्रिया के अनुसार नवीनीकृत किया गया है (वर्तमान प्रमाणपत्र संख्या टीसी-7501 25.04.2025 तक वैध है)।